# कंपनियों के दस्तावेज़ और तंबाकू विरोधी अभियान

अपने उत्पादों की बिक्री बढ़ाने के लिए तंबाकू कंपनियों द्वारा किए गए गोपनीय अनुसंधान के नतीजों का उपयोग अब तंबाकू विरोधी अभियान में किया जाएगा। 1998 में यू.एस. के 46 प्रांतों ने बड़ी-बड़ी तंबाकू कंपनियों पर मुकदमा चलाया था। यह मुकदमा तंबाकू-जनित बीमारियों के इलाज का खर्च तंबाकू कंपनियों से वसूलने के लिए चलाया गया था। इस मुकदमे के अंत में एक समझौता हुआ था जिसके तहत तंबाकू उद्योग को अपने 1 करोड़ से ज़्यादा गोपनीय दस्तावेज़ सार्वजनिक करना पड़े थे।

अब कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की रेबेका शेन ने इनमें से 170 दस्तावेज़ों का विश्लेषण करके बताया है कि बिग टोबेको उन लोगों के बारे में कितना कुछ जानता था जिनके लिए धूम्रपान मुख्यतः एक सामाजिक गतिविधि थी। ये आंकड़े वैसे तो कंपनी के व्यापार को बढ़ावा देने के लिए इकट्ठे किए गए थे मगर इनसे पता चलता है कि कंपनी ने ऐसे धूम्रपानियों को पहचानने के लिए खूब मेहनत की थी।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में शोध करने वाले यह मानते आए हैं कि सामाजिक धूम्रपानी आम तौर पर कॉलेज उम्र के होते हैं। इनमें से कुछ को आगे चलकर सिगरेट की लत लग जाती है जबकि कुछ सिगरेट छोड़ देते हैं। बिग टोबेको के आंकड़े दर्शाते हैं कि वास्तव में इनमें से बहुत से लोग उम्र के चौथे दशक में भी सामाजिक कारणों से धूम्रपान जारी रखते हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि सामाजिक धूम्रपानी कुल में करीब 10-23 प्रतिशत तक होते हैं। यह पहली बार है कि सामाजिक कारणों से धूम्रपान करने वालों की तादाद का अनुमान सामने आया है।

रेबेका शेन को लगता है कि इस अध्ययन से चिकित्सकों को सामाजिक धूम्रपानियों को पहचानने में मदद मिलेगी। इसके अलावा वे इनके संदर्भ में अलग रणनीति भी बना सकेंगे। जैसे शेन का मत है कि सामाजिक धूम्रपानी प्रायः उन रणनीतियों से बिलकुल प्रभावित नहीं होते जिनमें धूम्रपान के स्वास्थ्य सम्बंधी खतरे बताए जाते हैं क्योंकि ये लोग खुद को धूम्रपानी मानते ही नहीं हैं। तो इनके बारे में कोई और रणनीति सोचनी होगी। ***(स्रोत फीचर्स)***